AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author

डॉ. अंजना अग्रवाल

सहायक आचार्य

संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

लालकोठी स्कीम, जयपुर, राजस्थान, भारत

शोध सार

मानवीय जीवन ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है, जिसमें दो पहलू है – जैविक तथा सामाजिक। जहाँ भोजन तथा जैविक क्रियायें जीवन को बनाये रखने तथा बढ़ाने के लिये आवश्यक हैं। वहीं शिक्षा सामाजिक जीवन एवं सर्वांगीण विकास के लिये चरम आवश्यक है। आज वर्तमान में इन्टरनेट की सहायता से ही पृथ्वी पर वास्तविक रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना चरितार्थ हो रही है, वहीं शिक्षा के क्षेत्र में भी इन्टरनेट अपना बहुत योगदान दे रहा है। यदि प्राचीन समय की शिक्षा प्रणाली या शैक्षिक गतिविधियाँ की बात की जाये तो वह शिक्षा मात्र व्यवहारिक ज्ञान एवं पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित थी लेकिन वर्तमान संदर्भ में बालक शिक्षा ग्रहण करने में सबसे ज्यादा विश्वसनीय इन्टरनेट की मानता है। वह शिक्षक के द्वारा प्रदान किये गये ज्ञान के अलावा इन्टरनेट द्वारा प्राप्त सूचनाओं को ज्यादा सत्य एवं विश्वसनीय मानता है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने ''विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का विद्यार्थियों शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' विषय पर शोध किया। शोध प्रबन्ध से प्राप्त निष्कर्षो से यह कहा जा सकता है कि विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द

इन्टरनेट, शैक्षिक जीवन, शारीरिक जीवन, बौद्धिक क्षमता, विद्यार्थी.

प्रस्तावना

मानवीय जीवन ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है, जिसमें दो पहलू है – जैविक तथा सामाजिक। जहाँ भोजन तथा जैविक क्रियायें जीवन को बनाये रखने तथा बढ़ाने के लिये आवश्यक हैं वहीं शिक्षा सामाजिक जीवन एवं सर्वांगीण विकास के लिये चरम आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य नये विचारों तथा जीवन शैलियों को अपनाने की कोशिश करता है। शिक्षा के माध्यम से ही वह अपनी बौद्धिक क्षमता तथा ज्ञान को बढ़ाकर प्रकृति को अपनी इच्छा के अनुरूप नियंत्रित करने का प्रयास करता है। शिला ही सही अर्थों में मानव को मानव बताती है।

जन्म के समय बालक का आचरण पशु के समान होता है। वह अपनी मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर आचरण करता है। वह भोजन, निद्रा और भय से ग्रस्त होता है। शिक्षा ही उसे अपनी पाश्विक शक्तियों का दमन कर उन्हें कल्याणकारी मार्ग की ओर ले जाती है। शिक्षा मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक

विकास की आधारशिला है। बालक जहाँ विद्यालयों में पुस्तकों, प्रयोगों एवं अध्यापकों के अनुभवजन्य उपदेशों के माध्यम के ज्ञान के अभूतपूर्व संसार में विचरण करता है, वहीं दूसरी ओर, वह अपने परिवार में तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आजीवन ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त करता है। शिक्षा के इसी क्षेत्र में समय–समय पर ऐसे अनेक आविष्कार हये हैं जिनके परिणाम स्वरूप मानव सभ्यता में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हुये है। समय–समय पर हमारी सभ्यता से ऐसे अनेक आविष्कार किया हैं जिनके परिणामस्वरूप मानव सभ्यता में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हुये हैं। 19वीं शताब्दी में ऐसी हो एक क्रांति में मानव समाज पर व्यापक प्रभाव डाला तथा उसके रहने, सोचने तथा कार्य करने की पद्धति ही परिवर्तित कर दी। इस सूचना क्रान्ति का आधार स्तम्भ 'कम्प्यूटर' ही है। अपने आरम्भिक समय में यह कम्प्यूटर अत्यधिक महंगा तथा दुर्लभ था, जो कि वैज्ञानिक प्रयोगशाला तथा विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों तक सीमित था, उस समय इसका उपयोग करना अत्यंत जटिल था। शनैः शनैः समय के साथ–साथ कम्प्यूटर की तकनीक में व्यापक सुधार होता गया और अब वह सर्व सुलभ हो चुका है। इसका उपयोग हमारे दैनिक जीवन की आवश्यकता बनता जा रहा है। वर्तमान में बैंक, रेल आरक्षण काउन्टर, कार्यालयों इत्यादि स्थानों पर इसके प्रयोग बिना जीवन असंभव सा प्रतीत होता है। अपने घर में आने वाले बिजली, पानी व टेलीफोन इत्यादि के बिल भी कम्प्यूटर द्वारा ही मुद्रित किये हुये होते है।

आज वर्तमान में इन्टरनेट की सहायता से ही पृथ्वी पर वास्तविक रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना चरितार्थ हो रही है वहीं शिक्षा के क्षेत्र में भी इन्टरनेट अपना बहुत योगदान दे रहा है। यदि प्राचीन समय की शिक्षा प्रणााली या शैक्षिक गतिविधियाँ की बात की जाये तो वह शिक्षा मात्र व्यवहारिक ज्ञान एवं पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित थी लेकिन वर्तमान संदर्भ में बालक शिक्षा ग्रहण करने में सबसे ज्यादा विश्वसनीय इन्टरनेट की मानता है। वह शिक्षक के द्वारा प्रदान किये गये ज्ञान के अलावा इन्टरनेट द्वारा प्राप्त सूचनाओं को ज्यादा सत्य एवं विश्वसनीय मानता है।

बालक को गृहकार्य के रूप में प्रदान किया गया कार्य प्रोजेक्ट वह स्वयं तैयार न करके अपने माता–पिता या बड़े भाई–बहिन की सहायता से पूर्ण कर पाता है। यहाँ बालक का अधिगम पूर्ण रूप से नहीं हो पाता है। माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थी इन्टरनेट का शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ अन्य गतिविधियों में ज्यादा संलग्न होते हैं। किशोरावस्था के कारण वह इन्टरनेट से जुड़ी हुई सकारात्मक गतिविधियों के स्थान पर नकारात्मक गतिविधियों की तरफ ज्यादा तेजी से आकर्षित होते हैं तथा कई प्रकार के साइबर अपराध जैसे अपराधों से वह जुड़ जाता है साथ ही साथ बालक के लगातार कई घंटो तक इन्टनेट का प्रयोग करने से उसे विभिन्न शारीरिक परेशानियाँ जैसे (कमर दर्द आंखों से सम्बन्धित समस्या, मानसिक रोग) से गुजरना पड़ता है।

अतः इसी कारण से इस समस्या को ध्यान में रखते हुये शोधकर्ता द्वारा इस समस्या का चयन किया गया। इससे पहले इस समस्या से सम्बन्धित अन्य शोध साहित्य प्राप्त हुये हैं उनसे शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया कि इन्टरनेट का विद्यार्थियों के शारीरिक व शैक्षिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

समस्या का औचित्य

जैसा कि हम सभी जानते है कि वर्तमान समय में इंटरनेट का मानव के साथ एक घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। मनुष्य की श्रम करने की प्रवृत्ति में बहुत तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा हैं तथा वह प्रत्येक कार्य को शीघ्र समाप्त करना चाहता है। हर प्रकार की सूचना को शीघ्रत्तम हमारे तक पहुंचाने के साथ ही वह सभी क्षेत्रों में (शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, रेलवे, बैंकिंग) बहुत तीव्र गति से कार्य कर रहा है इसलिये आज का मनुष्य बहुत विवेकशील प्राणी होते हुए भी बहुत कम अपने विवेक का उपयोग करता और पूर्णतः इन्टरनेट पर निर्भर हो गया हैं। जहाँ पहले के समय में व्यक्ति लाखों रूपयों तक की गणना अपने अंगुलियों पर कर लेता या आज वही मनुष्य चार अंको को जोड़ने में भी संगणक (कैलकूलेटर) की सहायता लेता है इसलिये इन्टरनेट की इतनी सारी सुविधाओं के बावजूद भी वह वर्तमान विद्यार्थियों के शारीरिक व शैक्षिक जीवन पर प्रभाव डाल रहा है। आज के समय में अधिकांश विद्यालयों में विद्यार्थियों को इन्टरनेट से जुड़े प्रायोगिक कार्य करने एवं प्रोजेक्ट तैयार करने के लिये कहा जाता

है। इस प्रकार का कार्य देने का शिक्षण उद्देश्य केवल यह है कि बालक को आधुनिक तकनीकी शिक्षा से जोड़ा जायें, उसे तकनीकी शिक्षा प्रदान की जाये लेकिन इन सबको ज्यादा विश्वसनीय न मानकर इन्टरनेट पर ज्यादा भरोसा करता है साथ–साथ ही साथ इन्टरनेट के माध्यम से आज हम देश विदेश के विख्यात विश्वविद्यालयों से ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं तथा मनचाहे पाठ्यक्रम में प्रवेश पा सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में इन्टरनेट का इतना ज्यादा योगदान के तत्पश्चात् भी वह पूर्ण तरह से बालकों या वर्तमान युवा वर्ग को उन्नति की तरफ नहीं ले जा रहा है। आज का अधिकांश युवा वर्ग इन्टरनेट के साथ व्यतीत करते है जिससे उनके शैक्षिक जीवन पर ही नहीं वरन् शारीरिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

शोध समस्या का कथन

विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।

समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का स्पष्टीकरण

समस्या में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली का स्पष्टीकरण निम्न प्रकार से है:

1. **इन्टरनेट सुविधायें**: इन्टरनेट सुविधाओं से तात्पर्य हैं कि इन्टरनेट पर विद्यमान वह सभी सूचनायें जो व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि करती हैं तथा उसकी जिज्ञासा को शांत करती है।
2. **शैक्षिक जीवन**: शैक्षिक जीवन से तात्पर्य है कि बालक के शिक्षा ग्रहण करने के दौरान जो भी क्रियाकलाप व ऐसी गतिविधियाँ जो शिक्षा के क्षेत्र से सम्बन्धित है।
3. **शारीरिक जीवन**: शारीरिक जीवन से तात्पर्य व्यक्ति की शारीरिक संरचना, शारीरिक अवस्था से है।

समस्या से उभरने वाले प्रश्न

1. क्या विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है?
2. क्या विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है?
3. क्या विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है?

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
2. विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
3. विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पनायें

1. विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

जनसंख्या

राजस्थान राज्य के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के समस्त विद्यार्थी प्रस्तुत शोध की जनसंख्या होगी।

शोध में चयनित न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के कुल 100 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है, जिसमें से सरकारी विद्यालयों के 50 एवं गैर सरकारी विद्यालयों के 50 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

न्यादर्श चयन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श चयन के लिये यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन के चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन के दो चर हैं, जो निम्न प्रकार से हैः

- **स्वतंत्र चरः** विभिन्न इन्टरनेट सुविधायें।
- **आश्रित चरः** शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान, प्रतिशत का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन का सीमांकन (परिसीमन)

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन को जयपुर जिले के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरण (प्रश्नावली) प्रयोग किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श 100 रखा गया है।

क्र.सं.	कथन	सहमत	असहमत
1.	विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव	79.75	20.25
2.	विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव	77.50	22.50
3.	विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव	83.41	16.59

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

निष्कर्ष

1. तालिका से स्पष्ट होता है कि विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है अर्थात् विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का जैसे ऑनलाईन दूरस्थ शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, प्रायोगिक शिक्षा एवं मनोरंजन से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने पर उनके शारीरिक स्तर, मानसिक स्तर, व्यक्तित्व पर एवं संवेगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

2. तालिका से स्पष्ट होता है कि विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है अर्थात् विभिन्न अर्न्तजालीय सुविधाओं का जैसे ऑनलाईन दूरस्थ शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, प्रायोगिक शिक्षा एवं मनोरंजन से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने पर उनके शारीरिक स्तर, मानसिक स्तर, व्यक्तित्व पर एवं संवेगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. तालिका से स्पष्ट होता है कि विभिन्न इन्टरनेट सुविधाओं का गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक व शारीरिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है अर्थात् विभिन्न अर्न्तजालीय सुविधाओं का जैसे ऑनलाईन दूरस्थ शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, प्रायोगिक शिक्षा एवं मनोरंजन से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने पर उनके शारीरिक स्तर, मानसिक स्तर, व्यक्तित्व पर एवं संवेगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सुझाव

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन जयपुर जिले तक ही सीमित है, यह अध्ययन अन्य जिलों के विद्यार्थियों के सम्बन्ध में भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन जयपुर जिले के विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित है। यह अध्ययन अन्य जिलों के विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों जैसे महाविद्यालयशोध कार्य के परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कर्ष – स्तर के विश्वविद्यालय स्तर के, शोध स्तर के विद्यार्थियों को लेकर भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन को एसटीसी, बी.एड व एम.एड. प्रशिक्षणार्थियों के संदर्भ में भी किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत अध्याय 100 विद्यार्थियों तक ही सीमित है। यह अध्ययन बड़ा न्यादर्श लेकर भी किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन अभिभावकों व शिक्षक वर्ग के संदर्भ में भी किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. अस्थाना, बिपिन; एवं अस्थाना, श्वेता (2005) *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा – 2।
2. भटनागर, आर.पी.; भटनागर, ए.बी.; एवं भटनागर अनुराग (2015) *शिक्षा अनुसंधान,* विनय रखेजा, केयर ऑफ आर लाल बुक डिपो, निकट गर्वनमेण्ट कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ।
3. भटनागर, सुरेश (2011) *शिक्षा मनोविज्ञान,* विनय रखेजा, केयर ऑफ आर लाल बुक डिपो, निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड़, मेरठ।
4. गोदारा, के.एल.; एवं कुमार, हर्ष (2016) *आइसीटी की समीक्षात्मक समझ,* राखी प्रकाशन प्रा. लि., 12 ए चतुर्थ तल, रमन टॉवर, संजय प्लेस, आगरा।
5. गोयल, हेमन्त कुमार (2008) *कम्प्यूटर विज्ञान शिक्षण,* विनय रखेजा केयर ऑफ आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. गुप्ता, एस.पी.; एवं गुप्ता अल्का (2017) *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,* शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
7. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2007–2008) *शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, संजय प्लेस, आगरा–2।
8. मिश्रा, शैलजा (2013–2014) *कम्प्यूटर शिक्षा,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, ज्योति ब्लॉक संजय प्लेस, आगरा–2।
9. पचौरी, गिरीश (2013) *शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार,* विनय रखेजा केयर ऑफ आर लाल बुक डिपो, निकट गवर्नमेण्ट इण्टर कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ।
10. सिंघल, अनुपमा; एवं कुलश्रेष्ठ एस.पी. (2013–14) *शैक्षिक तकनीक के मूल आधार,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, ज्योति ब्लॉक, संजय प्लेस, आगरा–2।
11. सिंह, रामपाल; एवं शर्मा ओ.पी. (2012–13) *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, ज्योति ब्लॉक, संजय प्लेस, आगरा–2।
12. www.shodhganga.com, Accessed on 30/12/2024.
13. www.education.com, Accessed on 18/12/2024.

––==00==––